इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
अमरकंटक (म.प्र.) || Amarkantak (MP)

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति

Ref. NO. IGNTU/2020/VC

Date: 01/05/2020

संदेश

श्रमिक दिवस, 2020

श्रम योगियों को समर्पित इस श्रमिक दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाई। किसी बोझ को बोझ ना मानने, किसी भी प्रकार के अहंकार से मुक्त रहने, वर्तमान को सब कुछ मानने, थोड़े में संतुष्ट होने, असंग्रही बनने और कर्मपथ पर निरंतर चलते रहने का संदेश देने वाले श्रमपुंज, श्रमवीर, श्रम साधकों को नमन। हम सभी का जीवन श्रम आधारित है। हम सभी किसी ना किसी प्रकार का श्रम करते हैं क्योंकि सक्रियता चैतन्य मनुष्य का लक्षण है। वस्तुतः हम सभी श्रमजीवी हैं, कोटि अलग हैं, कोई बुद्धि से, कोई विचार से, कोई हाथ से, श्रम तो सभी करते हैं। अतः यह दिवस हम सबके लिए है।

किसी भी देश की विकास यात्रा में श्रमिकों का योगदान सर्वाधिक होता है। श्रमिक का आशय केवल ईंट गारा ढोने वाला अथवा शारीरिक श्रम करने वाला व्यक्ति ही नहीं है बल्कि वे सभी लोग हैं जो अपने बौद्धिक या शारीरिक श्रम द्वारा राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में अपना योगदान करते हैं। यह सत्य है कि शारीरिक श्रम करने वाले ही विकास की आधारशिला रखते हैं और उस पर विकास के भव्य प्रासाद की आकृति तैयार करते हैं। श्रमिक समाज का अभिन्न अंग हैं इसलिए उनका सम्मान, उनकी एकता और उनके अधिकारों के समर्थन में यह दिवस प्रेरणापुंज की तरह है। यह दिन हमें श्रम की महत्ता का स्मरण कराता है तथा श्रमिकों के सम्मान के लिए भी हमें प्रेरित करता है। । श्रम का पसीना अमृततुल्य होता है क्योंकि यह मानवता के विकास, मानव सेवा तथा स्वयं की सेवा का मार्ग प्रशस्त करता है। श्रम हमारे अस्तित्व का प्रमाण है। अकर्मण्यता या आलस्य से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है।

भारत में किसानों, मजदूरों और कामगारों के योगदान को सदैव याद रखने की प्रवृत्ति एवं परम्परा है। कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। शारीरिक श्रम से शारीरिक निर्वाह होना चाहिए और विचार की सम्वृद्धि के लिए बौद्धिक श्रम आवश्यक है तथा सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन के लिए संस्कार आवश्यक है। परिश्रम से प्राप्त उपलब्धि या वैभव सुखद और संतोषप्रद होता है। बिना परिश्रम के वैभव पाप के समान है, ऐसा महात्मा गाँधी जी ने कहा था। उनका मानना था कि राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह लोगों को अपने हाथों से काम करना सिखाये और श्रम की गरिमा का नागरिकों को बोध कराए।

इसीलिए हमारे राष्ट्र ने श्रम के महत्व को सदैव स्वीकार किया है और इसे गरिमा प्रदान की है। ''सत्यमेव जयते'' की तरह ही ''श्रमेव जयते'' का मंत्र अपने यहाँ प्रचलित, स्वीकृत और समादृत है। राष्ट्र निर्माण के लिए श्रम की नितांत आवश्यकता एवं उपादेयता है। संपूर्ण विश्व में स्थापत्य एवं शिल्प के जितने भी बिम्ब, प्रतीक और प्रतिमान हैं वह सब श्रमिकों की कुशलता, कर्मठता एवं त्याग के प्रतिफल हैं। हम यदि इन संरचनाओं को देखकर अभीभूत होने की स्थिति, आनन्द का अनुभव करने की स्थिति और अपनी परंपरा एवं सभ्यता के प्रति गौरवबोध होने की स्थिति में होते हैं तो इनके पीछे इन सभी को स्वरूप देने और स्पंदित करने वाले श्रमिकों की भूमिका है जो सतत् सम्मान के अधिकारी हैं। मई दिवस के अवसर पर मैं इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों, अपने श्रम से इस शिक्षा के मंदिर को सिंचित करने वाले श्रमवीरो, समस्त कर्मवीर श्रमिकों एवं विश्व के सभी श्रमिकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आप सभी को मई दिवस की एक बार पुनः कोटिशः बधाईयाँ एवं आप सभी के सफल एवं सुखद जीवन के लिए अनंत मंगलकामनाएँ।

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

Amarkantak, District – Anuppur, Madhya Pradesh, PIN 484887
Phone : 07629 269710 || Fax 07629 269712 || eMail : vc@igntu.ac.in || website :www.igntu.ac.in

Scanned with CamScanner